P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

कल्हण की ऐतिहासिक दृष्टि–कश्मीर के आलोक में

अनिता सेनगुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर एवं समन्वयक,
संस्कृत विभाग,
ईश्वर सरन पी0जी0 कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

सारांश

महाकवि कल्हण की ऐतिहासिक दृष्टि पर चर्चा करने से पहले यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि संस्कृत साहित्यों में कश्मीर–सुषमा का अनेक प्रकार से मनोहारी वर्णन किया गया है। प्रकृति की प्यार भरी क्रोड में पला हुआ कश्मीर आज तक अनेक भारतीय नरेशों की क्रीडा तथा विहार भूमि रहा है। महाराज अशोक ने इस भू–भाग को अपनी कलाप्रियता के कारण उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया था। वैद्य श्रीरामदत्तशास्त्री ने कश्मीर की शोभा को अपनी लेखनी से इस प्रकार अङ्कित किया–

"हिमालयाधिष्ठितपुण्य–भूमौ, सिन्धुर्विपाशा–सरितो वहन्ति।
सरो विभाति डलझीलनाम्ना, कश्मीर–प्रथिते प्रदेशे।।(1)
वन्या विचित्राश्च मृगा भ्रमन्ति, कस्तूरिका–मोद–मंद स्त्रवन्ति।
वृकाः शृगाला गवयश्चरन्ति, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(2)
ग›ा यथा हि उत्तरवाहिनी सा, तथैव ताप्ती सरितात्र देशे।
प्रसिद्धनाम्नोत्तरवाहिनी सा, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(3)
कैलासगौरं करुणावतरम्, भक्ताः, हिमानी–शिवमर्चयन्ति।
अनेककष्टान्यपि सहयमानाः, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(4)
आतङ्वादैरपि ताड्यमानाः, अत्रत्यगाथा–परिगीयमानाः।
क्व निर्गताः पण्डित्यक्तवासाः, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(5)
इतस्ततो देश–प्रदेश–मध्ये, गृहं परित्यज्य बहिर्गतानाम्।
न कोऽपि जानाति विपत्तिरेषाम्, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(6)
विभुं शिवं श्रीरघुनाथ–नाथम्, देवीं जगन्मोहक–वैष्णवीं च।
संप्रार्थयामः सुखशन्तिरस्तु, कश्मीर प्रथिते प्रदेशे।।(7)

कालान्तर में मुगलों ने इसे अधिकार में लिया, उनसे महाराज रणजीत सिंह ने छीन लिया, भारत की यही स्वर्णभूमि कश्मीर आज राजनैतिक दुर्दशा के कारण त्राहि–त्राहि कर रही है।

मुख्य शब्द : कल्हण की ऐतिहासिक, संस्कृत साहित्य

प्रस्तावना

आधुनिक ऐतिहासिक रीति से साधनों के पर्यालोचनों के आधार पर निर्मित, प्राचीन कश्मीर का एक महनीय ऐतिहासिक ग्रन्थ उपलब्ध होता है– जिसका नाम है– राजतरंगिणी (राजवर्ण रूपी नदी) रचनाकार हैं– महाकवि कल्हण। महाकवि कल्हण (1150 ई0) कश्मीर के महाराज हर्षदेव (1068–1101) के महामात्य चम्पक के पुत्र थे। इनके पितृव्य कनक भी हर्ष के कृपापात्रों में थे। उनकी सरस्वती राग द्वेष से अलिप्त रहकर 'भूतार्थचित्रण' के साथ ही साथ 'रम्यनिर्माण' में भी निपुण थी, तभी तो अतीत काल (इति+ह+आस्) को 'प्रत्यक्ष' बनाने में उन्हें सरस सफलता मिली। वास्तविकता तो यह है कि कल्हण ने इतिहास (इति+ह+आस) को काव्य की विषयवस्तु बनाकर भारतीय साहित्य को एक नई विधा प्रदान की। राजतर›िणी की रचना महाकवि कल्हण ने 1148ई0 में आरंभ की तथा दो वर्ष के परिश्रम के उपरान्त 1150ई0 में राजतर›िणी की रचना पूरी हुई। यह ग्रंथ कश्मीर के राजनैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक व्यवस्था एवं साहित्यिक तथा आर्थिक दशा को जानने का एक विश्वकोष है। इसमें लगभग 8000 संस्कृत के श्लोकों का वर्णन मिलता है।

कल्हण एक ऐसे युग के प्रतिनिधि थे जिसकी साहित्यिक विधा के रसात्मक आदर्श से प्रेरित काव्यात्मक शैली को लोग पसन्द करते थे। उस समय की माँग थी कि कवि को निष्पक्ष होना चाहिए।[1] वे कश्मीर पर शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों की पूर्ण वंशावली भी देना चाहते थे। किन्तु कश्मीर के अशांतयुग में हर्ष की मृत्यु के उपरान्त गृहयुद्ध तथा संघर्ष का युग आ गया था, उस समय जो अनिश्चय एवं अशांत का वातावरण व्याप्त था वह एक अन्य ऐसा तत्त्व था जिसने उन्हें इतिहास लिखने के लिए प्रेरित किया। कल्हण के इतिहास लेखन का एक अन्य उद्देश्य यह भी था कि इतिहास के पठन से भविष्य के

राजाओं की परम्परा श्रेष्ठ होगी तथा सामान्य जनता उदात्त मानवीयगुणों के प्रति श्रद्धावान् रहेगी।[2] इस ग्रन्थ को लिखने में कवि ने पूर्ववर्ती राजगाथाओं, राजाज्ञाओं, प्रशस्तिपत्रों एवं अभिलेखों से घटनाओं की सच्चाई जानने का पूरा प्रयास किया, क्योंकि उन्हें कश्मीर का सच्चा इतिहास लिखना था। इसकी प्रतिज्ञा ग्रन्थ के आरंभ में ही की–

श्लाघ्य स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।
भूतार्थ–कथने यस्य स्थेस्येव सरस्वती।।[3]

इस ग्रन्थ में आठ तरंग हैं। संक्षेप में प्रत्येक तरंग में राजाओं का विवरण इस प्रकार है–

प्रथम तरंग

गोनन्द प्रथम से लेकर अन्ध युधिष्ठिर तक 75 राजाओं का विवरण है।

द्वितीय तरंग

राजाओं के 192 वर्षों के शासनकाल का अध्ययन किया गया है।

तृतीय तरंग

गोनन्द वंश के अंतिम राजा बालादित्य तक दस राजाओं के 536 वर्षों के राज्यकाल का विवरण है।

चतुर्थ तरंग

260 वर्षों तक राज्य करने वाले 17 नृपों का इतिहास निरूपित है।

पंचम तरंग

अवन्तिवर्मा के राज्यारोहण के साथ उत्पलवंश के सूत्रपात का वर्णन तथा संकटवर्मा, सुगन्धादेवी एवं शङ्करवर्मन के राज्यकाल का निरूपण है।

षष्ठ तरंग

10 राजाओं के, 936 से 1003 ई0 तक के शासनकाल का विवरण।

सप्तम तरंग–6

राजाओं के सन् 1003 से 1101ई0 तक के समय का ऐतिहासिक चित्रण।

अष्टम तरंग

सातवाहन वंश के उप्पल, सुस्सल, भिक्षाचर तथा जयसिंहादि राजाओं की जीवनगाथा तथा कृत्यों का प्रत्यक्षीकरण कराया गया है।

इस ग्रंथ में राजाओं के घर की कुटिल कथा वर्णित है। महाकवि कल्हण ने इस प्रबन्ध में राजाओं की हीन से हीन कथा भी निबद्ध की है, मानों कश्मीर के राजाओं की अच्छी बुरी सारी कहानी, रागद्वेष से दूर रहकर लिखना उनके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। जिस कहानी को कश्मीर के राजवंश वाले तथा उनके अमात्यों के वंशज पढ़ेंगे और अपना इतिहास जानेंगे। कवि के पिता चम्पक राजा हर्ष के यहाँ मन्त्री थे। हर्ष का लम्बा चरित कवि ने निबद्ध किया है। हर्ष का चरित ऐसा है कि इस्लाम का नारा बुलन्द करते आक्रामक लुटेरों को भी मात कर देता है, उसने धन के लिए मन्दिरों को लूटा, मूर्तियों को तोड़कर धन की खोज की, धातु की मूर्तियाँ रस्सी में बांधकर राजमार्ग पर घसीट कर लायी गयी।[4] उसके दुश्चरित की सीमा नही थी। उसने अपने पिता कलश की बहन की पुत्री नागा के साथ बलात्कार किया।[5] बाद में हर्ष का बड़ा बुरा अन्त हुआ और मारा गया। इसी प्रकार छठीं तरंग में दिद्दारानी का चरित है, जो प्रकट रूप से अपने संभोग–सुख के लिए नए–नए युवकों को बुलाती थी। बाद में उसने खश जाति के तुंग नामक युवक को अपना पति बना लिया।[6]

सम्पूर्ण राजतरंगिणी में तीन राजाओं का चरित विशेष रूप से आकृष्ट करता है, एक तो है– दिग्विजय की प्रचंड अभिलाषा रखने वाला ललितादित्य[7], जिसने कान्यकुब्ज पर आक्रमण किया, भारत के अन्य पूर्वी दक्षिणी भागों पर भी विजय का अभियान किया था। दूसरा राजा जयपीड[8] और तीसरा है–अवन्तिवर्मा। इन राजाओं के राज्यकाल का वर्णन करते हुए कई कश्मीरी विद्वानों एवं कवियों का उल्लेख भी कल्हण करते हैं जिससे उनके इतिहास की सही जानकारी हो जाती है। ललितादित्य के कान्यकुब्ज पर आक्रमण के प्रंसग में वहाँ के राजा यशोवर्मा की राज्यसभा के कवि वाक्पतिराज और भवभूति का उल्लेख है (आठवीं शती ई0 का पूर्वार्ध)।

इस प्रकार इस ग्रन्थ में ललितादित्य जैसे महत्वाकांक्षी योद्धा राजाओं की चर्चा है तो साथ ही चन्द्रपीड जैसे सफल परोपकारी राजाओं का भी वर्णन है किन्तु सामन्तों, दामारों, तंत्रिनो, एकांगो और ब्राह्मणों ने शासकों की शक्ति व मर्यादा को कम करके उन्हें राजनैतिक दृष्टि से दुर्बल बना दिया। कल्हण कहते हैं कि तरंगिणी और एकौं अपने राजाओं को इस प्रकार नियन्त्रित और प्रदर्शित करते थे ''जैसे सपेरे सांपों को'' अपने निजी लाभ के लिए नियंत्रित और प्रदर्शित करते हैं।[9]

राजा और सरकार के साथ मतभेद होने के बाद पुरोहित एकजुट होकर एक सशक्त राजनैतिक हथियार के रूप में भूख हड़ताल करते थे। तंत्रिन, एका›, दामरा, कायस्थ और ब्राह्मण पुरोहित परिषद– इन सबको कल्हण की लेखनी के कठोर प्रहार का सामना करना पड़ा।

राजतरंगिणी प्रकारान्तर से तुजुक (चरित या कहानी) ए राजाओं की दरिया है, जिसमें कवि किसी उदात्त चरित को ही अपने काव्य का नायक नहीं बनाता, बल्कि वह समान रूप से निन्दा के पात्र राजाओं की भी जीवनी को सच–सच कहने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध है। उसने ऐसे राजाओं का चरित् लिखा है जो किसी प्रकार राजा कहलाने के योग्य नहीं है। भाषाओं की आलोचना करते हुए कवि लिखते हैं–

अमानुषत्वं पुरुषाधिराजा विटस्तैवः स्वस्य विचिन्त्य सत्यम्।
तृतीयमक्ष्यभ्यधिकं भुजौ वा ममेति मत्वा न विन्दन्ति मृत्युम्।।
निशासु येषां प्रभवन्ति दारा दिनेश्वमात्या चियताधिकारः।
अहो भ्रमः स्वस्य यदत्र तेऽपि विदन्ति भूपा प्रभविष्णुभावम्।।[10]

अर्थात् राजाओं का यह अभिमान है कि वे विटों (चापलूसों) की स्तुति को सत्य मानकर अपने के मनुष्य से ऊपर देवता समझने लगते हैं, मानते हैं कि मुझमें तीसरी आँख है और मैं शिव हूँ। हमारी दो से अधिक भुजाएँ हैं (मैं विष्णु हूँ) तथा मृत्यु को भी सत्य नहीं मानते। किन्तु सच्ची स्थिति इसके विपरीत है, रात्रि में स्त्रियाँ उन पर राज्य करती हैं और दिन में मंत्रीगण उन पर अधिकार

रखते हैं। अहो, राजाओं का अपना यह भ्रम है कि वे कुछ न होते हुए भी अपने को सभी का प्रभु मानते हैं।

कल्हण ने प्रथम तरंग में गोनन्द से कश्मीर राजवंश का आरम्भ किया है यह राजा युधिष्ठिर के काल से भी पूर्व का है। भगवान् कृष्ण के समय का राजा दामोदर था। उनके अनन्तर क्रमशः कई वंश कश्मीर के राज सिंहासन पर आरूढ़ हुए। कल्हण के समय सुस्सन का पुत्र राजा जयसिंह प्रतापी राजा था, जैसा कि प्रथम तरंग में उल्लिखित है कि इस भूमि पर पहले नागवंशी क्षत्रियों का अधिकार था, नाग का अर्थ भारविश नागवंश क्षत्रिय से है, इन क्षत्रियों का प्रकृष्ट एवं मधुर सम्बन्ध वैदिक ब्राह्मणों से रहा। नागकन्या चन्द्रलेखा का विवाह ब्राह्मण से हुआ।[11] छठीं ईसवी के हूण–राजा मिहिरकुल ने कश्मीर को जीत लिया और शासन किया।[12] इसके बाद हूण भारतीय शैव बन गए।

कल्हण के राजतरंगिणी के कश्मीर के सामाजिक परिदृश्य का जीवन्त चित्रण हुआ है। उस समय दासता व्यवस्थित रूप में विद्यमान नही थी, भारत के अन्यत्र सभी क्षेत्रों की भाँति जाति प्रथा कश्मीर में किञ्चित भिन्न रूप में अस्तित्व में थी। तत्कालीन कश्मीर में जाति किसी असैनिक या सैनिक पद पर आसीन होने में बाधक नहीं थी। डोम और ब्राह्मण दोनों एक समान रूप से अनायास ही सैनिक बन सकते थे। किसी भी जाति से सम्बद्ध व्यक्ति अपनी धन–सम्पदा तथा प्रभाव के बलबूते पर स्वयं को इतना ऊपर ले जा सकता था कि वह दायरा की मान–मर्यादा प्राप्त कर सके।

कल्हण ने कश्मीर में अन्तर्जातीय विवाह का भी उल्लेख अपने ग्रंथ में किया है। योद्धा शंङ्करवर्मन माता एक ''निम्न जाति के मद्य निर्माता की पुत्री थी। राजा–चक्रवर्मन (923–33ई0) ने हांसी नामक एक डोम स्त्री से विवाह किया और उसे पटरानी बनाया। उसने अपने सेवक–सेविकाओं के साथ श्रीनगर के समीप स्थित विष्णु के पवित्र रामस्वामिन् मन्दिर में प्रवेश किया। राजतरंगिणी के अनुसार कश्मीर की स्त्रियाँ सुन्दरता के लिए विख्यात थी। वे पर्दा प्रथा तथा हरम से अवगत नही थी, महिलाएँ स्वतंत्र थीं। वे अपनी निजी अचल सम्पत्तियों की देखभाल स्वयं भी करती थी। महिलाएँ सैनिक टुकड़ियों का नेतृत्व भी करती थी। कश्मीर में सती प्रथा कई शताब्दियों तक प्रचलन में रही।

कवि ने इतिहास की गाथा को लिखने की प्रस्तावना में कवि और काव्य की महिमा का बड़ा बखान किया है। वह कहता है कि यदि कवि न हो तो राजाओं का नाम और यश दोनों समाप्त हो जाएँ, उसका काव्य ही राजाओं के यश को अजर–अमर बना देता है, उनकी एक उक्ति उद्धृत है–

येऽप्यासन्निभ कुम्भ शायितपदा येऽपि श्रियं लेभिरे
येषामप्यवसन्पुरा युक्तयो गेहेष्वहश्चन्द्रिकाः।
तॉल्लोकोऽयमवैति लोकतिलकान् स्वप्नेऽप्यजातानिव।
भ्रातः सत्कविकृत्य किं स्तुतिशतौरन्धं जगत्त्वां बिना।।[13]

अर्थात् लोक वन्द्य जिन राजाओं के चरण हाथियों के मस्तक पर पड़ते थे, जिन्होंने राजलक्ष्मी प्राप्त करती थी, जिनके राजभवन में सुन्दरी युवतियाँ दिन में ही चाँदनी छिटकाया करती थी, उन राजाओं का यह संसार स्वप्न में भी उत्पन्न नहीं मानता है (क्योंकि कवियों द्वारा उनके सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं हुआ) हे बन्धु के समान कवि के सत्काव्य! तुम्हारी शतशः स्तुतियाँ भी करें तो कम है, अधिक क्या कहें, जगत् तुम्हारे बिना अन्धा है।

इस ग्रन्थ में नीति व्यवहार और राजनीति की उक्तियाँ पर्याप्त हैं। कवि ने कायस्थों की भरपूर आलोचना की, जो राज्य का धन तरह–तरह से सोखते जा रहे हैं और उन ब्राह्मणों को भी घृणा की दृष्टि से देखा है जो खुशामद में न्याय और सत्य की बात नहीं कहते। प्रत्येक तरंग में यह बात उभर कर सामने आती है कि राज्य पर रूपवती नारी, (वह चाहे किसी भी कुल की हो) अपना अधिकार बना लेती है।

निष्कर्ष

प्रो0 ए0बी0 कीथ ने अपने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में कल्हण को एक सफल इतिहासकार के रूप में चित्रित किया और हर्षचरित से राजतरंगिणी को श्रेष्ठ बताया।[14] यह तथ्य सत्य प्रतीत नहीं होती, राजघराने का रोजनामचा उस देश का इतिहास नहीं होता। इस ग्रन्थ में ऐसी बातों, घटनाओं और प्रवृत्तियों का उल्लेख नहीं है, जिससे हम कश्मीर के समाज, संस्कृति और परम्परा की, एवं राजवंश की जागरूकता की पहचान कर सके। ललितादिव्य तथा जयापीड की विजय के अभियान में बहुत सी बातें कल्पित हैं। उनकी काव्यशैली का एक बड़ा दोष श्लेष का प्रयोग था जो रचना के लिए घातक था, जिसने अर्थ और यथार्थ को दुर्बोध बनाने का प्रयास किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रीधरन् ई0 सलूजा मनजीत सिंह, इतिहास लेख, ओरियंट ब्लैकस्वान, 2011, पृ0 5*
2. *दुबे, सत्यनारायण,: इतिहास दर्शन एवं लेखन अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इला0 2009 पृ0 180*
3. *राजतरंगिणी प्रथम तरंग–7*
4. *राजतरंगिणी –7/1090–1100*
5. *संभोगं भगिनीवर्गे कुर्वता दुर्वचोरुषा।*
6. *निगृहीता च मुक्ता च नागा पुत्री पृिष्वसुः।। 7/1148*
7. *वही 6/318–333*
8. *वही तरंग 4/126–360*
9. *तरंग –4*
10. *श्रीधरन्, ई0 सलूजा मनजीत सिंह, इतिहास लेख, 2011, पृ0 298*
11. *राजतरंगिणी 7/1112–13*
12. *तरंग– 1/242–43*
13. *तरंग 1/289–90*
14. *राजतरंगिणी 1/47*
15. *संस्कृत साहित्य का इतिहास– ए0बी0 कीथ अनुवादक मंलदेव शास्त्री पृ0 207–207*